कालिदास के काव्य में प्रकृति चित्रण

दामोदर मोहन्तः*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20614788

ABSTRACT

संस्कृत साहित्य के इतिहास में महाकवि कालिदास का स्थान सर्वोपरि है। उन्हें 'कविकुलगुरु' और 'भारत का शेक्सपियर' कहा जाता है। कालिदास की लेखनी की सबसे बड़ी विशेषता उनका प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम है। जहाँ अन्य कवियों के लिए प्रकृति केवल एक पृष्ठभूमि है, वहीं कालिदास के लिए वह एक सजीव, संवेदनशील और क्रियाशील सत्ता है। उन्होंने जड़ प्रकृति में चेतनता का संचार कर उसे मानव जीवन का अभिन्न अंग बना दिया है।

कालिदास ने अपने सभी काव्यों और नाटकों में प्रकृति का सुंदर वर्णन किया है, लेकिन उन्होंने विशेष रूप से ऋतुओं के चित्रण के लिए 'ऋतुसंहार' की रचना की। इस ग्रंथ में उन्होंने केवल बाहरी प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन ही नहीं किया, बल्कि यह भी बताया है कि विभिन्न ऋतुएँ मानव के मन और भावनाओं को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। फिर भी, ऋतुओं का स्वतंत्र और विस्तारपूर्वक चित्रण उनके प्रकृति-प्रेम को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

KEYWORDS: ऋतुसंहार, मेघदूत, मनुष्य और प्रकृति, कालिदास की कल्पना, निष्कर्ष

* **डॉ. दामोदर-मोहन्तः,** सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः, दयानन्द सागर वाणिज्य अकादमी, बेङ्गलूरु।.

ऋतुसंहार के प्रथम श्लोक में ग्रीष्म ऋतु का अत्यंत जीवंत चित्रण किया गया है। इसमें कहा गया है कि इस समय सूर्य अत्यंत प्रचंड हो जाता है, जबकि चंद्रमा मन को प्रिय लगता है। जलाशयों का जल कम हो जाता है, जिससे बार-बार स्नान करने की इच्छा होती है। दिन के अंत का समय विशेष रूप से सुखद प्रतीत होता है, और कामभावना भी कुछ शांत हो जाती है। इस प्रकार, हे प्रिये! यह ग्रीष्म ऋतु अब आ चुकी है:

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसञ्चयः।
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो निदाघकालोऽयमुपागतः प्रिये॥ 1.1

ऋतुसंहार

मेघदूत में तो कवि ने प्रकृति एवं मानव में तादात्म्य स्थापित कर दिया है। पूर्वमेघ में प्रधानतया प्रकृति के बाह्य रूप का चित्रण है, किंतु उसमें मानवीय भावनाओं का संस्पर्श है, मेघदूत तो वर्षा ऋतु की ही उपज है। वहाँ वर्षा से प्रभावित होने वाले समस्त जड़-चेतन पदार्थों का निरूपण है। मेघ जिस-जिस मार्ग से होकर आगे निकल जाता है उस-उस मार्ग में अपनी छाप छोड़ जाता है-

नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्द्धरूढै
राविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्।
जग्धवारण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमाघ्राय चोर्व्याः।
सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम्॥ 1.22,

मेघदूत

वर्षा के समय प्रकृति के विविध रूपों को देखकर यह सहज ही समझा जा सकता है कि मेघ किस दिशा में जा रहे हैं। जैसे, खिले हुए कदंब के फूलों पर भौंरे आनंदित होकर मंडरा रहे हैं, पहली वर्षा से निकली कोमल कंदलियों को हिरण चर रहे हैं, और हाथी वर्षा के कारण धरती से उठने वाली सोंधी सुगंध को सूँघ रहे हैं। इन अलग-अलग प्राकृतिक गतिविधियों से मेघों के मार्ग का अनुमान स्वतः हो जाता है।

मनुष्य और प्रकृति का संबंध अत्यंत गहरा है, इसलिए प्रकृति का प्रभाव सीधे उसके मन और भावनाओं पर पड़ता है। 'मेघदूत' में कवि ने इसी सत्य को व्यक्त करते हुए कहा है कि बादलों को देखकर सुखी व्यक्ति का मन भी बदल जाता है। जब प्रियजन पास हो और उसे आलिंगन करने का अवसर मिले, तब तो हृदय में प्रेम और आनंद और भी बढ़ जाता है; फिर जो प्रिय से दूर है, उसकी अवस्था का तो कहना ही क्या।

मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः।

कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे॥ 1.3,

मेघदूत

मेघ को देख लेने पर तो सुखी अर्थात् संयोगी जनों का चित्त कुछ का कुछ हो जाता है फिर वियोगी लोगों का क्या कहना। कालिदास ने प्रकृति को मनुष्य के सुख-दु:ख में सहभागिनी निरूपित किया है। विरही राम को लताएँ अपने पत्ते झुका-झुका कर राम के अपहरण का मार्ग बताती हैं, मृगियाँ दर्भांकुर चरना छोड़कर बड़ी-बड़ी आँखें दक्षिण दिशा की ओर लगाये टुकुर-टुकुर ताकती रह जाती हैं।

कालिदास प्रकृति को चेतन एवं भावनायुक्त पाते हैं। पशु-पक्षी आदि तो चेतनवत व्यवहार करते ही हैं, सम्पूर्ण चराचर प्रकृति भी मानव की भाँति व्यवहार करती दिखायी देती है। महाकवि ने मेघ को दूत बनाकर धूम, अग्नि, जल, पवन के सम्मिश्रण रूप जड़ पदार्थ को मानव बना दिया है। वे प्रकृति में न केवल मानव की बाह्य आकृति का आरोप करते हैं अपितु उसमें सुख-दु:खादि भावों की भी सम्भावना करते हैं। वे प्रकृति को प्राय: प्रेमी अथवा प्रेमिका के रूप में देखते हैं। मेघदूत में उज्जयिनी की ओर जाते हुए मेघ को मार्ग में पड़ने वाली निर्विन्ध्या नदी विभिन्न हाव-भाव से आकृष्ट करेगी-

वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणि काञ्चीगुणाया:
संसर्पन्त्या: स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभे:।
निर्विन्ध्याया: पथि भव रसाभ्यन्तर: संनिपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥ 1.29,

मेघदूत

हे मेघ! तरंगों के हलचल के कारण शब्दायमान पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी को धारण करने वाली, स्खलित प्रवाह के कारण सुन्दरतापूर्वक बहने वाली अर्थात् मस्त होकर चलने वाली और भँवर रूप नाभि को दिखाने वाली निर्विन्ध्या नदी रूपी नायिका से मिलकर तुम रस अवश्य प्राप्त करना, क्योंकि कामिनियों का हाव-भाव प्रदर्शन ही रतिप्रार्थना वचन होता है।

महाकवि कालिदास ने प्रकृति के श्रेष्ठ तत्त्वों को ग्रहण कर उनकी अप्रस्तुत रूप में योजना की है। वे पात्रों को उपस्थित करने के लिए प्रकृति के सुन्दर तत्त्वों से सादृश्य स्थापित करते हैं। रघुवंश में राजा रघु के मुख-सौन्दर्य के वर्णन के लिए वे प्रकृति के सुन्दरतम एवं प्रसिद्ध उपमान चन्द्र का आश्रय लेते हैं।

प्रसादसुमुखे तस्मिंश्चन्द्रे च विशदप्रभे। तदा चक्षुष्मतां प्रीतिरासीत्समरसा द्वयो:॥ 4.18

रघुवंश

शरद ऋतु में रघु के खिले हुए मुख और उज्ज्वल चन्द्रमा को देखकर दर्शकों को एक-सा आनन्द मिलता था। कवियों ने नारी के शरीर की तुलना प्राय: लता से की है, किंतु कुमारसम्भव में कालिदास पार्वती को चलती-फिरती एवं फूलों से लदी लता के रूप में देखते हैं-

आवर्जिता किञ्चिदिव स्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम्।
पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा सञ्चारिणी पल्लविनी लतेव॥ 3.54

कुमारसम्भव

महाकवि कालिदास प्रकृति को उपदेशिका रूप में भी पाते हैं। वे प्रकृति से प्राप्त होने वाले सत्य का स्थान-स्थान पर उल्लेख करते हैं जो मानव जीवन का मार्ग-निर्देश करती है एवं आदर्श उपस्थापित करती है। मेघ बिना कुछ कहे चातकों को वर्षा जल प्रदान कर उनका उपकार करता है-

निःशब्दोऽपि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्य:।
प्रत्युक्तं हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥

कुमारसम्भव 2.57

पपीहे के जल माँगने पर मेघ बिना उत्तर दिये उन्हें सीधे जल दे देता है। सज्जनों का यह स्वभाव होता है कि जब उनसे कुछ माँगा जाय तो वे मुँह से कुछ कहे बिना, काम पूरा करके ही उत्तर दे देते हैं। रघुवंश में कालिदास को जल के स्वभाव से शिक्षा मिलती है। जल तो प्रकृत्या शीतल है, उष्ण वस्तु के सम्पर्क से भले ही कुछ क्षण के लिए जल में उष्णता उत्पन्न हो जाए। इसी प्रकार महात्मा भी प्रकृति से क्षमाशील होते हैं, अपराध करने पर वे कुछ क्षण के लिए ही उद्विग्न होते हैं-

स चानुनीत: प्रणतेन पश्चान्मया महर्षिर्मृदुतामगच्छत्।
उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य॥

रघुवंश 5.54

प्रकृति के सहज सौन्दर्य, मानवीय राग, कोमल भावनाओं तथा कल्पना के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमारसम्भव के अष्टम सर्ग में मिलता है, वह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सन्ध्या और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिव के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है, और प्रसंग, पात्र, देशकाल के अनुरूप प्रकृति का इतना उदात्त और कमनीय वर्णन

विश्व साहित्य में दुर्लभ कहा जा सकता है। पश्चिम में डूबते सूर्य की रश्मियां सरोवर के जल में लम्बी-लम्बी होकर प्रतिबिम्बित हो रही है, तो लगता है कि अपनी सुदीर्घ परछाइयों के द्वारा विवस्वान भगवान ने जल में सोने के सेतुबन्ध रच डाले हो।

पश्य पश्चिमदिगंतलम्बिना निर्मितं मितकथे विवस्वता।
दीर्घया प्रतिमया सरोम्भसां तापनीयमिव सेतुबन्धनम्॥

कुमारसम्भव 8.34

वृक्ष के शिखर पर बैठा मयूर ढलते सूर्य के घटते चले जाते सोने के जैसे गौरमण्डलयुक्त आतप को बैठा पी रहा है।

एष वृक्षशिखरे कृतास्पदो जातरूपरसगौरमण्डलम्।
हीयमानमहरत्ययातपं पीवरोरु पिबतीव बर्हिणः॥

कुमारसम्भव, 8.36

पूर्व में अंधेरा बढ़ रहा है, आकाश के सरोवर से सूर्य ने जैसे आतपरूपी जल को सोख लिया, तो इस सरोवर के एक कोने में जैसे कीचड़ ऊपर आ गया हो।

पूर्वभागतिमिरप्रवृत्तिभिर्व्यक्तपङ्कमिव जातमेकतः।
खं हृतातपजलं विवस्वता भाति किञ्चिदिव शेषवत्सरः॥

कुमारसम्भव – 8.37

कालिदास की कल्पना खेतों और खलिहानों में रमती है, प्रकृति के सहज सौन्दर्य का मानव-सौन्दर्य से और कृत्रिम साज-सज्जा से उत्कृष्ट पाती है। कुमारसम्भव में चन्द्रमा की किरणों के लिये जौ के ताजा अंकुर का उपमान देकर उन्होंने मानों स्वर्ग को धरती से मिला दिया है-

शक्यमोषधिपतेर्नवोदयाः कर्णपूररचनाकृते तव।
अप्रगल्भयवसूचिकोमलाश्छेत्तुमग्रनखसम्पुटैः करा॥

कुमारसम्भव – 8.62

प्रकृति में मानवीय राग, करुणा और हृदय की कोमलता के दर्शन कालिदास अपनी विश्वदृष्टि के द्वारा ही कर सके हैं। अंधेरा रात्रि रमणी का जुड़ा है, जिसे चन्द्रमा अपने करों से बिखेर देता है, और फिर उस रमणी के सरोज लोचन वाले मुख को उठा कर वह चूम लेता है-

अङ्गुलीभिरिव केशसञ्चयं सन्निगृह्य तिमिरं मरीचिभिः।
कुड्मलीकृतसरोजलोचनं चुम्बतीव रजनीमुखं शशी॥

कुमारसम्भव – 8.63

उत्प्रेक्षा और स्वभावोक्ति उत्कृष्ट संसृष्टि कवि ने इस प्रकार के प्रकृति-चित्रणों में की है। उक्त पद्य में 'कुड्मलीकृतसरोजलोचनं' कामिनी का लज्जा से नेत्र मूंदने का चित्र होने से वल्लभदेव के अनुसार स्वभावोक्ति है, जबकि 'चुम्बतीव' में समासोक्ति तथा उत्प्रेक्षा दोनों अलंकार आ गये हैं।

महाकवि कालिदास ने यद्यपि प्राय: प्रकृति के कोमल रूप का चित्रण किया है, किंतु कुमारसम्भव के वर्षा चित्रण में भयावहता दर्शनीय है-

घोरान्धकारनिकरप्रतिमो युगांतकालानलप्रबलधूमनिभो नभोऽन्ते।
गर्जारवैर्विघटयन्नवनीधराणांशृङ्गाणि मेघनिवहो घनमुज्जगाम॥

कुमारसम्भव 17.41

कालिदास के प्रकृति वर्णन का निष्कर्ष:

- **सजीव और मानवीय रूप:** कालिदास प्रकृति को मूक नहीं, बल्कि जीवंत मानते हैं। उनके 'अभिज्ञानशाकुंतलम' में शकुंतला की विदाई पर वन के वृक्ष-पशु-पक्षी आंसू बहाते हैं, जो प्रकृति का सजीव रूप है।
- **भावनात्मक संबंध:** प्रकृति उनके पात्रों के सुख-दुःख में भागीदार होती है। मेघदूत में मेघ एक दूत की भूमिका निभाता है, और ऋतुसंहार में प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण प्रेम भावनाओं को बढ़ाता है।
- **सूक्ष्म निरीक्षण और यथार्थ:** कालिदास ने नदियाँ, पर्वत, वनस्पति और पशु-पक्षियों का अत्यंत सजीव वर्णन किया है। हिमालय का सौंदर्य (कुमारसंभवम्) और नदियों के चित्र उनके गहन निरीक्षण को दर्शाते हैं।
- **सौंदर्य और रसात्मकता:** कालिदास प्रकृति के सुकुमार रूप (फूल, चाँदनी, वसंत) के प्रेमी हैं, लेकिन उन्होंने भयानक रूप का भी चित्रण किया है। प्रकृति का यह चित्रण रस-सृष्टि में सहायक है।
- **मानव-प्रकृति एकात्मता:** कालिदास का काव्य सिखाता है कि मानव समाज प्रकृति के बिना अधूरा है। प्रकृति को उन्होंने मानव की सहचरी और अभिन्न अंग के रूप में चित्रित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. रघुवंशम् सम्पा० — एम. आर. काले। मुम्बई: मोतीलाल बनारसीदास, 2022।
2. कुमारसम्भवम् सम्पा० — एम. आर. काले। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 2016।
3. मेघदूतम् सम्पा० — सीताराम चतुर्वेदी। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन, 2018।
4. ऋतुसंहारः सम्पा० — बलदेव उपाध्याय। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज, 2015।
5. कालिदास लेखक — वासुदेवशरण अग्रवाल। प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 2001।
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास वाराणसी: शारदा निकेतन, 2019।
7. कालिदास की लालित्य-योजना नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2005।
8. भारतीय काव्यशास्त्र दिल्ली: अलंकार प्रकाशन, 2014।
9. संस्कृत काव्य में प्रकृति चित्रण वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन, 2011।
10. कालिदास साहित्य एवं संस्कृति दिल्ली: साहित्य अकादेमी, 2010।